

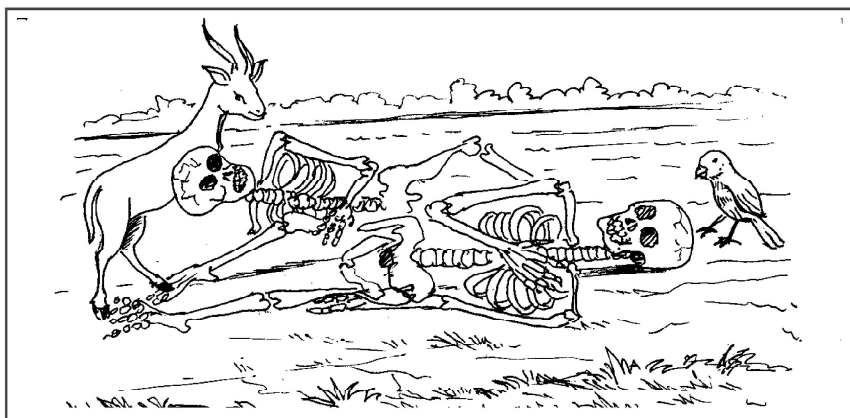


पाठ – पाँच

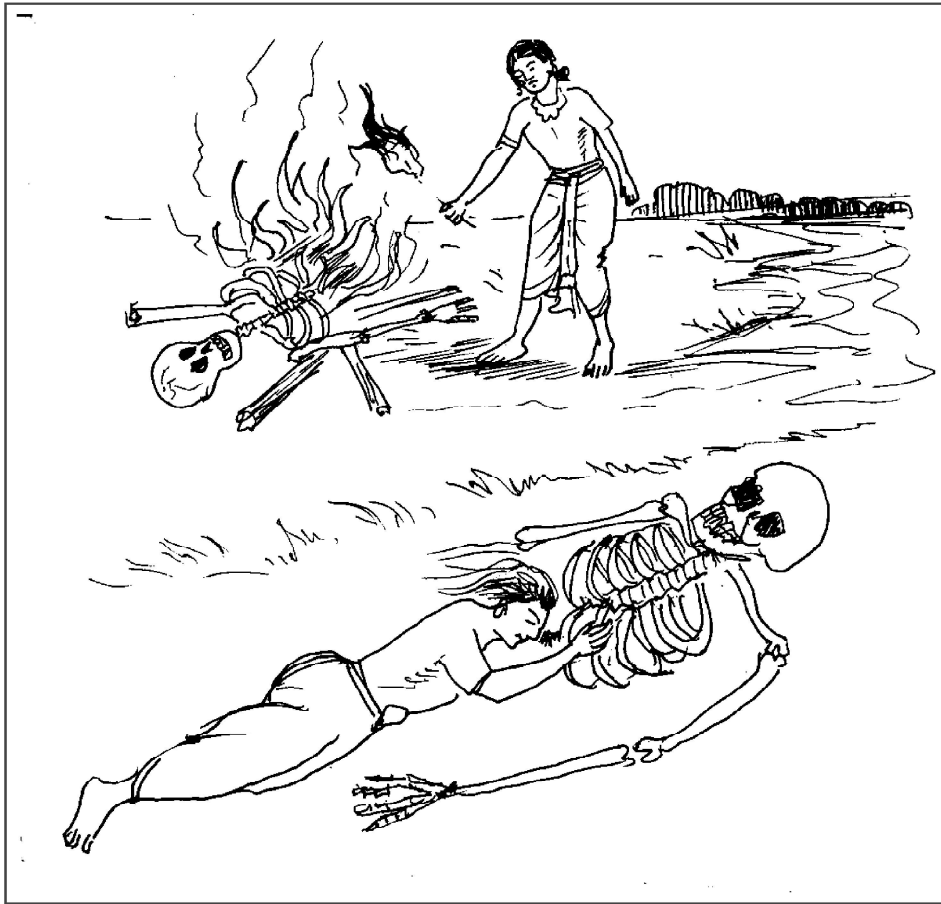
मित्र और मित्रता – कर्म का फल

कहा जाता है – मित्र मिलना आसान है, पर मित्रता का पालन करना कठिन काम है। वैसे ही सच्चा मित्र पाना भी उतना ही कठिन है जितना निभाना।

बहुत पुराने जमाने की बात है, किसी एक देश में एक राजा और एक सामन्त रहते थे। दोनों के एक-एक पुत्र थे। उन दोनों की मित्रता इतनी अच्छी रही कि दोनों की मित्रता लोगों के लिए उल्लेखनीय हो गई। वे दोनों एक साथ अध्ययन करते, साथ-साथ खाते, घूमते और काम करते थे। एक साथ वे दोनों विदेश में जाकर अध्ययन करते थे। उन दोनों ने इतना गहरा अध्ययन किया कि राजकुमार अपने शरीर को त्याग कर एक स्वर्णिम शुक का रूप तथा सामन्तकुमार एक स्वर्णिम हिरण का रूप धारण कर सकने लगे। दोनों आपस में एक दूसरे की विद्या की प्रशंसा करते थे। उन्होंने विचार किया कि उनका विद्याध्ययन समाप्त हो गया है, घर छोड़कर विदेश में रहते अधिक समय हो गया है, अब घर वापस जाना चाहिए। यही सोचकर वे घर की तरफ वापस आ गए।



आते-आते कुछ दिनों बाद घर पहुँचने में कुछ समय रह गया तब सामन्तकुमार ने राजकुमार से कहा— “ मित्रवर, अब हम घर पहुँच रहे हैं, अपनी अपनी विद्या की परीक्षा कर देखें।” “ सही है मित्रवर, देखना चाहिए।”— राजकुमार ने कहा। “ तब तो तुम पहले विद्याभ्यास कर दिखाओ।”— सामन्तकुमार ने कहा। राजकुमार ने राजी होकर अपना अस्थि-पंजर छोड़कर एक स्वर्णिम शुक का रूप धारण कर लिया और एक पेड़ की डाली पर जा बैठा। उस समय सामन्तकुमार भी एक स्वर्णिम हिरण का रूप धारण कर कुछ समय उछल-कूद कर खेलता रहा। इसके तुरन्त बाद स्वर्णिम हिरण का रूप धारण करने वाले सामन्तकुमार ने राजकुमार के अस्थि-पंजर को आग में जला दिया।



सामन्तकुमार का स्वार्थ परायण वाला काम देखकर स्वर्णिम शुक के रूप धारण करनेवाले राजकुमार ने कहा – “ मित्रवर, तुमने अपने एक मित्र से विश्वासघात किया। तुम कितने निष्ठुर व्यक्ति हो। तुमने मित्रता तोड़ दी। जाओ, तुम सुख और शान्ति से जीओ। लेकिन याद रखो, एक दिन सच्चाई तुमको मार डालेगी, यह कहकर स्वर्णिम शुक रोते-रोते उड़ गया।



सामन्तकुमार राजकुमार के रूप में राजमहल में आ गया। उस दिन से उसने तोता मारना शुरू किया। स्वर्णिम शुक को सामन्त कुमार का हिंसात्मक काम ज्ञात हुआ। स्वर्णिम शुक अपने मित्र के निर्मम काम को अपनी पत्नी से चुपचाप बता देने का मौका ताकता रहा। एक दिन उसको एक अच्छा मौका मिला और वह अपनी पत्नी के सामने आया। फिर रोते-रोते उसने सारी कहानी अपनी पत्नी से बता दी। राजकुमार बने सामन्तकुमार से यह भी कहने के लिए कहा कि एक बार स्वर्णिम हिरण का रूप उसे दिखा दे। थोड़ी देर के बाद सामन्तकुमार आ गया। उस औरत ने सामन्तकुमार से वही कहा जो

उसके पति ने बताया था। सामन्तकुमार को यह नहीं मालूम था कि क्रूर कर्म का फल भोगने का अन्तिम समय आ गया है। उसने राजकुमार का असली अस्थि-पंजर छोड़कर एक स्वर्णिम हिरण का रूप लिया और इधर-उधर उछलने कूदने लगा। तब मौका पाकर स्वर्णिम शुक ने अपने खूद के अस्थि-पंजर में प्रवेश किया। स्वर्णिम शुक ने अब असली राजकुमार का रूप धारण कर लिया। उसने अपने कमरे में तुरन्त जाकर भाला निकाला और उस हिरण को मार डाला। इस तरह सामन्तकुमार के जीवन का अन्त अपने क्रूर कर्म का फल भोगकर हुआ।

कठिन शब्दों के अर्थ

स्वर्णिम	= सुनहला।
शुक	= तोता, सुग्गा।
विद्याभ्यास	= विद्या का अभ्यास।
अस्थि-पंजर	= हड्डियों का ढाँचा।
निर्मम	= निष्ठुर, कठोरतापूर्वक किया जानेवाला।

प्रश्न-अभ्यास

1. “ मित्र मिलना आसान है, पर मित्रता का पालन करना कठिन काम है।”
उपर्युक्त पंक्ति का तात्पर्य क्या है ?
2. सामन्तकुमार का कथन – “ तब तो तुम पहले विद्याभ्यास कर दिखाओ।” में निहित सामन्तकुमार के मन का भाव लिखिए।

3. सामन्तकुमार ने अपना अस्थि-पंजर आग में क्यों जला दिया ? अन्त में उसका फल क्या हुआ ?
4. 'एक दिन सच्चाई तुमको मार डालेगी।'

यह कथन किसने किससे कहा ? क्या यह कथन सही निकला ?
5. राजकुमार के कहने से छसकी पत्नी ने सामन्तकुमार से क्या रूप दिखाने को कहा ? उसका फल क्या हुआ ?
6. 'मित्र और मित्रता-कर्म का फल' पाठ का सारांश लिखिए।
7. राजकुमार और सामन्तकुमार दोनों के बारे में आपके विचार व्यक्त कीजिए।
8. 'मित्र और मित्रता -कर्म का फल' पाठ लोगों को क्या उपदेश देता है ?
9. आपको कौन-सा मित्र चाहिए— राजकुमार जैसा या सामन्तकुमार जैसा? युक्ति-युक्त पुष्टि कीजिए।
